जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – नवंबर 2021 ।। अंक – 16 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

परिवार को मिला
बीमा का लाभ
(पृष्ठ – 02)

आशा पहुंचा रही
खुशहाली का पैगाम
(पृष्ठ – 03)

चटकारे द्वारा
व्यवहार परिवर्त्तन का सार्थक प्रयास
(पृष्ठ – 04)

विपत्ति में बीमा का सहारा

बीमा एक ऐसा जीवन सुरक्षा कवच है जो विपत्ति की घड़ी में परिवार को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है। इससे बीमित व्यक्ति पर आश्रित परिजनों को तत्काल किसी के आगे हाथ फैलाने की नौबत नहीं आती है। जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं के जीवन की सुरक्षा एवं जोखिम को कम करने के लिए उन्हें बीमा के सुरक्षा चक्र से जोड़ा जा रहा है। परियोजना के द्वारा विगत कई वर्षों से जीविका दीदियों का बीमा कराया जाता रहा है। विपत्ति के समय यह परिजनों का सबसे बड़ा मददगार साबित हो रहा है। यही कारण है कि बीमा को लेकर समुदाय के मानस पटल पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। जीविका दीदियां अब बीमा के महत्व को समझने लगी हैं और वे इसके दायरे को विस्तृत करने के लिए निरंतर आगे बढ़ रही हैं। वित्तीय वर्ष 2016–17 में जहां जीविका से जुड़ी 8.6 लाख महिलाओं का बीमा कराया गया था वहीं 2019–20 में बीमित महिलाओं की संख्या बढ़कर 20.87 लाख हो गई। समूह की दीदियों का इस वर्ष बैंकों के माध्यम से प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत बीमा करवाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना :– इसकी अवधि 1 जून 2021 से लेकर 31 मई 2022 तक होगी। समूह से जुड़ी ऐसी महिलाएं जिनकी उम्र 18 से 50 वर्ष है, उन्हें इस योजना के तहत बीमा कराया जाता है। हालांकि पूर्व से बीमित सदस्य 55 वर्ष उम्र तक प्रीमियम भुगतान कर योजना का लाभ ले सकती हैं। इस योजना की प्रीमियम राशि 330 रुपये प्रति वर्ष निर्धारित है। पूरी प्रीमियम राशि का भुगतान सदस्यों द्वारा देय है। चूंकि यह बीमा बैंकों द्वारा किया जा रहा है ऐसे में सदस्यों का बचत खाता संबंधित बैंकों में होना आवश्यक है साथ ही बचत खाता आधार से जुड़ा होना चाहिए। इस बीमा योजना के अन्तर्गत स्वाभाविक मृत्यु की स्थिति में बीमित व्यक्ति के नॉमिनी को 2 लाख रुपये संबंधित बैंक शाखा से देय होगा।

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना :– इस योजना की अवधि भी 1 जून 2021 से 31 मई 2022 है। वहीं इस योजना हेतु उम्र सीमा 18 से 70 वर्ष के बीच है। इसकी प्रीमियम राशि 12 रुपये प्रतिवर्ष निर्धारित है। बैंक द्वारा सदस्यों के बचत खाते से प्रीमियम राशि काटी जाएगी। इस बीमा योजना के अन्तर्गत दुर्घटना से मृत्यु की स्थिति में बीमित दीदी के नॉमिनी को दो लाख रुपये दिया जाएगा। दीदी के साथ–साथ उसके परिवार के अन्य योग्य सदस्यों को भी इस योजना के तहत बीमा कराने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

परिवार को मिला बीमा का लाभ

जैबुर खातुन जिला रोहतास के प्रखंड दावथ में पंचायत सेमरी स्थित गांव मलियाबाग सेमरी की निवासी थीं और संस्कार जीविका महिला ग्राम संगठन से सम्बद्ध गोपी जीविका समूह की सदस्य थीं। वर्ष 2016 में वह समूह की सदस्य बनी थीं। वह घरेलु कार्यों के साथ–साथ अपने घर में बकरियां भी पालती थी। इनके पति मो0 हासिम अंसारी उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नॉएडा में एक कंपनी में मजदूरी का कार्य करते हैं। जैबुर खातुन जीविका समूह में जुड़ने के पश्चात समूह के गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। समूह की बैठक में प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना तथा प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना की चर्चा की गयी तथा इसके लाभ के बारे में बताया गया। जैबुर खातुन ने बीमा के लाभ को समझते हुए अपना बीमा करवाया।

वर्ष 2020 में जैबुर खातुन बीमार पड़ी, उनका इलाज कराया गया मगर दुर्भाग्यवश उनकी मृत्यु हो गयी। मृत्यु उपरान्त उनके पति मो0 हासिम अंसारी ने जैबुर खातुन द्वारा कराये गए बीमा के कागजात को जीविका कार्यालय में जमा किया। जाँच के बाद, मामले की सत्यता को प्रमाणित करते हुए मो0 हासिम अंसारी के खाते में 2 लाख रूपये बीमा की राशि बीमा कंपनी द्वारा प्रदान की गयी।

मो0 हासिम अंसारी कहते हैं कि–'उनको पता भी नहीं था कि उनकी पत्नी ने बीमा लिया था। उनकी मृत्यु के बाद समूह के सदस्यों ने इसकी जानकरी उनको दी और उन्होंने कागजात जमा किया।' उनकी तीन बेटी, एक बेटा और बूढी माँ है। जैबुर खातुन से उनको बहुत सहारा मिलता था। वे घर के सारे कार्यों को सँभालते हुए आर्थिक रुप से कुछ न कुछ मदद भी करती थीं। बीमा से प्राप्त 2 लाख रूपये की राशि जैबुर खातुन के परिवार को आर्थिक सहारा दिया जो उनके लिए एक बड़ी बात है।

जीविका से मिली जीने की नई राह

यह कहानी है अस्मिता दीदी की। अस्मिता दीदी खगड़िया जिला के चौथम प्रखंड की रहने वाली हैं। जब दीदी 15 साल की थीं तभी उनका विवाह हो गया। विवाह के बाद दीदी ने अपनी पढ़ाई नही छोड़ी और विवाह के बाद उन्होंने दसवीं की परीक्षा पास की। 2013 में दीदी रानी स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। जब बच्चे स्कूल जाने लगे तो दीदी को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा। ग्राम संगठन की बैठक में सीएम दीदी द्वारा दीदी को बैंक सखी के बारे में जानकारी दी गयी। दीदी को यह काम सही लगा और इसमें उन्होंने अपनी रूचि दिखाई।

इसके बाद जब ग्राहक सेवा केंद्र के लिए जिला से आवेदन मांगा गया तो दीदी ने आवेदन भरा और जिला स्तर पर आयोजित साक्षात्कार में दीदी का चुनाव कर लिया गया। इसके बाद राज्य स्तर पर आवेदन स्वीकृत हो जाने के बाद दीदी ने ग्राहक सेवा केंद्र खोल लिया। शुरूआत में तो दीदी महीने का मात्र 3000 से 4000 रूपया ही कमा पाती थीं। मगर आज दीदी महीने का 12000 से 15000 तक कमा लेती हैं, जिससे उनके बच्चों की पढ़ाई और घर का खर्च आराम से निकल जाता है। चूंकि चौथम खगडिया का बाढ़ग्रस्त प्रखंड है अत: बाढ के समय में भी दीदी नाव से घर–घर जाकर जरूरत मंद परिवारों को सीएसपी से रूपये निकासी कर फायदा पहुंचाया। अस्मिता दीदी अपने जीवन में आए इस परिवर्तन से बेहद खुश हैं तथा और ज्यादा मेहनत करना चाहती हैं। उनका मानना है कि ज्यादा मेहनत करने से वह आगे बढ़ सकती हैं जिससे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवा सकें। दीदी हर पल जीविका को दिल से धन्यवाद देती हैं।

आशा पहुंचा रही खुशहाली का पैगाम

आशा कुमारी बेगूसराय जिले के गढ़पुरा प्रखंड अन्तर्गत प्राणपुर गांव की रहने वाली हैं। आरम्भ में एक घरेलू महिला के रूप में अपना दाम्पत्य जीवन जीने वाली आशा कुमारी के मन में हमेशा कुछ विशेष करने की चाह बनी रही। इसी चाह के कारण सबसे पहले वह जनवरी 2015 में राधिका जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। राधिका समूह की बैठक में नियमित रूप से भाग लेने के कारण समूह स्तर पर संचालित सभी गतिविधियों को अच्छी तरह से जानने के कारण इनका चयन स्वास्थ्य पोषण तथा स्वच्छता विषय के लिए एमआरपी के रूप में हो गया। आशा देवी ने समुदाय में व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किये। समुदाय में पोषण तथा स्वास्थ्य के स्तर को सुधारने के लिए आशा देवी ने पोषण, स्वच्छता, पूरक आहार, संतुलित आहार, संस्थागत प्रसव, स्तनपान, शौचालय का प्रयोग पोषण बगीचा जैसे कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर समूह की सदस्यों के साथ–साथ उनके परिवार के अन्य सदस्यों के लिए प्रेरक का कार्य किया। अभी कोविड–19 के संक्रमण से बचाव के लिए समुदाय में जागरूकता लाने के लिए विशेष अभियान का सचांलन किया गया जिसमें आशा कुमारी की भूमिका उल्लेखनीय रही।

प्रतिभा की धनी तथा कठिन परिश्रम में विश्वास रखने वाली आशा कुमारी स्वयं से स्थानीय भाषा में गीत रचकर तथा गाकर समुदाय में स्वास्थ्य विषय पर जागरूकता लाने में काफी सफल रही हैं। इनके गाये कई गीतों की रिकॉर्डिंग भी की जा चुकी है। स्वास्थ्य, पोषण तथा स्वच्छता के विषय पर उत्कृष्ट कार्य करने के कारण इन्हें जिले के सर्वश्रेष्ठ एमआरपी के रूप में प्रथम पुरस्कार मिला। इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी बातों को रखने का अवसर प्राप्त हो चुका है जब नई दिल्ली में प्रधानमंत्री के एक कार्यक्रम में इन्हें बिहार का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके साथ ही बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन तथा पी.सी.आई. के द्वारा कई बार इनके उत्कृष्ट कार्य की पहचान को अलग–अलग माध्यमों द्वारा रेखांकित किया गया।

सफलता की नई इबारत लिख रही बबिता

सपनों को साकार करने में मेहनत, सोच और अपनों का साथ ही सहायक होती है। ग्रामीण परिवेश के बावजूद कई घरेलू महिलाओं ने इसी ललक से अपने सपनों को तो साकार किया ही औरों के लिए भी संबल बनी। बक्सर जिले के चौसा प्रखंड के अखौरीपुर गोला की बबिता अपने परिश्रम और लगन के बल पर सफलता की नित्य नई ऊंचाई को छू रही हैं। संत जीविका महिला स्वयं सहायता समूह से वर्ष 2017 से जुड़ी बबिता पहले सीएम बनी। फिर समूह से श्रृंगार दुकान के लिए तीस हजार रूपया ऋण लेकर पति को स्वरोजगार से जोड़ा। खुद महिलाओं को समूह से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रोत्साहित करती रहीं।

अपने उत्कृष्ट कार्यों के कारण अब बबिता एमआरपी के पद पर कार्य कर रही हैं। अब वो गाँव की महिलाओं को बेहतर स्वास्थ्य एवं पोषण के साथ–साथ बच्चों की देखभाल एवं खान–पान के लिए प्रशिक्षित करती हैं। कुल मिलकर अपने गाँव–समाज को आर्थिक, सामाजिक स्वावलंबन एवं बेहतर स्वास्थ्य हेतु कार्य कर रही हैं। इस कार्य से उन्हें मान–सम्मान भी मिल रहा है। यह सब बबिता के ही बेहतर कार्यशैली के कारण संभव हुआ है। बबिता कहती हैं कि–'जीविका ने उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाया है।' वो कहती हैं कि जीविका ने मेरे चेहरे पर जो खुशी दी है मैं उन सभी महिलाओं के चेहरे पर खुशी लाने की कोशिश कर रही हूँ जो समाज में आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़ी हैं।

चटकारे द्वारा व्यवहार परिवर्तन का सार्थक प्रयास

20–25 वर्ष पूर्व बिहार में स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति अच्छी नहीं थी। महिलाओं की प्राथमिकताओं में स्वास्थ्य एवं पोषण के मुद्दे शामिल नहीं थे। स्वास्थ्य एवं पोषण पर गंभीर नहीं रहने के कारण ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश लोग किसी ना किसी बीमारी के शिकार होते थे। गरीब लोगों की अधिकांश कमाई बीमारियों के ईलाज पर खर्च हो जाती थी। राज्य सरकार के प्रयासों के कारण पिछले दशकों में सामाजिक और आर्थिक स्तर पर बिहार में काफी विकास हुआ है। विकास के इन प्रयासों में स्वास्थ्य एवं पोषण जैसे महत्वपूर्ण विषय भी शामिल है। राज्य सरकार के स्वास्थ्य एवं पोषण के विषय को मुख्य धारा में लाने में 'जीविका' की काफी अहम भूमिका रही है। जीविका शुरूआत से ही दीदियों के स्वास्थ्य एवं पोषण में सुधार को हमेशा अपनी प्राथमिकता में रखा। आज इसका साकारात्मक असर साफ दिख रहा है। एक तरफ जहां जीविका की दीदियां खुद के स्वास्थ्य पर ध्यान दे ही रही हैं वहीं, अपने परिवार के स्वास्थ्य एवं पोषण का भी ख्याल रख रही हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि ईलाज के नाम पर होने वाले खर्चों में काफी कमी आई है और अब वह गरीबी के कुचक्र से बाहर निकल रही हैं।

विभिन्न अभियानों एवं सरकारी योजनाओं के साथ जुड़ाव भी जीविका दीदियों को स्वास्थ्य के विषय पर मुखर बनाया है। जीविका के प्रयास से वैसा वर्ग जो कभी भी अपने स्वास्थ्य एवं पोषण पर ध्यान नहीं देता था आज इस मुद्दे पर काफी गंभीर है। जीविका के प्रयास से समूह की दीदियां स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़ी सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ ले ही रही हैं वहीं, विभिन्न अभियानों में भी सक्रियता से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। स्वास्थ्य एवं पोषण के प्रति लक्षित समूहों का ध्यान आकृष्ट करने हेतु बैठक, गृह भ्रमण, प्रशिक्षण, जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर किया जा रहा है।

स्वास्थ्य एवं पोषण के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों में और गति लाने एवं उसे आमजन तक सहजता के साथ पहुंचाने के उद्देश्य से जीविका ने पीसीआई के साथ मिलकर कई नवाचार किया है। इसी नवचारों में एक 'चटकारे' धारावाहिक का निर्माण एवं उसका प्रदर्शन है। स्वास्थ्य एवं पोषण के विभिन्न संदेशों को लक्षित समूहों तक पहुंचाने के लिए 'चटकारे' धारावाहिक की प्रस्तुति विभिन्न स्तरों पर की जा रही है। चटकारे धारावाहिक द्वारा–'पूरक पोषक आहार अभियान, किचेन गार्डेन (पोषण बगीचा), गर्भावस्था के पूर्व और गर्भावस्था के बाद की देखभाल, स्तनपान को प्रोत्साहन देने का अभियान, बालिका शिक्षा, लिंग भेद की समाप्ति, नियमित टीकाकरण आदि को बढ़ावा देने का कार्य किया जा रहा है। चटकारे धारावाहिक को जीविका के कैडरों खासकर सीएनआरपी, एमआरपी आदि द्वारा लक्षित समूहों तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। चटकारे धारावाहिक का काफी व्यापक असर दिख रहा है। चटकारे धारावाहिक में विभिन्न पात्रों को इतने सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है कि दर्शक पात्रों के साथ खुद को जोड़ लेते हैं और कहानियों एवं संदेशों को स्वीकार करने में देर नहीं लगाते हैं। चटकारे के चरित्रों को लेकर विभिन्न प्रकार की खेल गतिविधियों का निर्माण किया गया है, जिसके द्वारा भी जीविका के लक्षित वर्ग को खेल–खेल में ही सारी सूचनाएं एवं जानकारी आसानी से उपलब्ध हो रही हैं। आने वाले दिनों में तकनीक के साधनों का बेहतर उपयोग करते हुए 'चटकारे' अपने उद्देश्यों में पूरी तरह सफल होगा।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर
- श्री सुधीर कुमार – प्रबंधक संचार, रोहतास